उत्तराखण्ड के अतीत को जानने का प्रयास-हिमालय संग्रहालय

शिवराज सिंह कपकोटी*

सारांश

हिमालय सदियों से मनुष्य को आकर्षित करता आया है। दुनिया में कोई भी पर्वत समूह इतना विविधता भरा नहीं है जितना कि हिमालय। अपने भूगोल के अनुरुप ही यह क्षेत्र विभिन्न लघु समाज, संस्कृतियों का क्षेत्र रहा है। इसी हिमालयी परिदृश्य मुख्यतः उत्तराखण्ड के भूगोल, समाज, संस्कृति, पुरातत्व, इतिहास, परंपराओं तथा कला आदि को समेटने का प्रयास इतिहास विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल द्वारा किया गया है और इस प्रयास का नाम है– 'हिमालय संग्रहालय'। संग्रहालय इस पर्वतीय समाज की विकास यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ावों के दस्तावेजों को समेटते हुए उन्हें संकलित, संरक्षित कर रहा है। संग्रहालय में प्रदर्शित तमाम ऐतिहासिक विरासतों से आज की युवा पीढ़ी, आगन्तुक तथा पर्यटक लाभान्वित हो रहे हैं और इस संग्रह से आने वाली पीढियां लाभान्वित होंगी और ज्ञानार्जन कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त यह संग्रहालय मुख्यतः समाज विज्ञान के लिए भी अपने शोध सन्दर्भों को प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

मुख्य शब्द– हिमालय, उत्तराखण्ड, संग्रहालय, संस्कृति, कला।

प्रस्तावना

इतिहास आदम से इंसान और इंसान से बेहतर मनुष्य बनने की विकास यात्रा का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। मनुष्य की विकास यात्रा के अनगिनत दस्तावेज सभी जगह यत्र–तत्र बिखरे हुए मिलते हैं। इन दस्तावेजों को अर्थात् मनुष्य की विकास यात्रा को लोग एक जगह पर देखकर अपने अतीत को जान सकें इसी आलोक में देश–विदेशों में ऐतिहासिक संग्रहालयों की स्थापना की गयी। वर्तमान में पूरे विश्व में हजारों संग्रहालय मौजूद हैं।

भारत में संग्रहालयों को सार्वजनिक संस्था के रुप में स्थापित करने का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। भारत में पहला जन संग्रहालय 1814 में कलकत्ता में स्थापित हुआ। इसके बाद शनैः–शनैः सम्पूर्ण भारत में संग्रहालयों के उदय का क्रम चला।[1]

उत्तराखण्ड के प्रमुख संग्रहालयों में अल्मोड़ा संग्रहालय, गुरुकुल संग्रहालय, गढ़वाल विश्वविद्यालय संग्रहालय, हिमालय संग्रहालय, नैनीताल, बैजनाथ संग्रहालय, गोपेश्वर संग्रहालय और लोक संस्कृति संग्रहालय, गीताधाम, भीमताल आदि हैं।

डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल में इतिहास विभाग की स्थापना 1951 में हुई। बहुत समय तक यहां इतिहास का पाठ्यक्रम परंपरागत रूप से विदेश तथा देश के इतिहास से संबंधित रहा। परंतु बाद में यहां के प्राध्यापकों के मन में विचार आया कि देश के इतिहास के साथ–साथ यहां के छात्रों को क्षेत्रीय इतिहास की भी जानकारी होनी चाहिए। अतः यहां पर स्नातकोत्तर में एक प्रश्नपत्र के रूप में उत्तराखंड का इतिहास भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया। इतिहास विभाग के कुछ प्राध्यापक जैसे प्रो0 शेखर पाठक, प्रो0 अजय रावत, डॉ0 हीरा भाकुनी आदि ने जब उत्तराखंड को जानने–समझने के उद्देश्य से उत्तराखंड के विविध क्षेत्रों की अकादमिक शोध यात्राएं कीं तो वे उत्तराखंड के इतिहास, समाज, संस्कृति, पुरातत्व आदि से संबंधित चीजों–दस्तावेजों का संकलन कर अपने साथ ले आये और इन्हीं प्राध्यापकों के प्रयासों से हिमालय संग्रहालय की स्थापना 1987 में इतिहास विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल के अन्तर्गत की गयी। जिसका उद्घाटन तत्कालीन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो0 यशपाल ने किया। वर्तमान में यह संग्रहालय डी0एस0बी0 परिसर के ऐतिहासिक ऐसम्बली हॉल में स्थित है। अपनी स्थापना वर्ष से संग्रहालय संग्रह–संकलन, अभिलेखीकरण–प्रलेखीकरण के कार्यों में निरन्तर संलग्न है और परिसर तथा विविध स्थानों में अनेक महत्त्वपूर्ण प्रदर्शनियों व विभाग के साथ मिलकर कई सेमीनारों व गोष्ठियों का आयोजन कर चुका है। संग्रहालय में न सिर्फ उत्तराखण्ड के पुरातत्व एवं इतिहास बल्कि यहाँ के लोक साहित्य, संस्कृति–कला, जैव–विविधता, समाज, क्षेत्रीय पत्रकारिता, कृषि उपकरण, सिक्के, घरेलू उपयोग के उपकरण, लोक वाद्य यंत्र, दस्तावेज, स्वाधीनता संग्राम तथा व्यक्तित्वों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध है।

प्रस्तर मूर्तियाँ तथा वीरखम्भ :– उत्तराखंड के पुरातत्व पर अभी बहुत ज्यादा अध्ययन नहीं हुआ है। फिर भी यहां वास्तुकला, मूर्तिकला, अभिलेख, गुफाशैलचित्र, उत्खनन से प्राप्त अवशेष आदि पुरातात्विक सामग्री की भरमार है।[2]

* शोधार्थी, इतिहास विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

हिमालय संग्रहालय में भी उत्तराखंड के पुरातत्व से संबंधित दुर्लभ मूर्तियां रखी हुई हैं। मूर्तियाँ लगभग दूसरी सदी ईसवी पूर्व से लेकर 10 वीं से 15 वीं सदी के मध्य की हैं। जिनमें चतुर्भुजी गणेश, चतुर्भुजी विष्णु, द्विभुजीय सूर्य, चतुर्भुजी वाराह, नवग्रह आदि प्रमुख हैं तथा दो पूर्ण वीरखम्भ संग्रहीत हैं।[3]

सिक्के :– सिक्के भी किसी क्षेत्र के इतिहास को जानने का एक स्रोत हैं। उत्तराखंड में कुशाण कालीन, कुणिन्द कालीन, चंद कालीन, सिक्के पाये गये हैं। हिमालय संग्रहालय में सिक्कों की एक अलग गैलरी बनायी गयी है। यहां कुशाण कालीन स्वर्ण मुद्रा से लेकर मध्यकालीन, आधुनिक व विदेशी मुद्रायें– सिक्के लगभग 300 की संख्या में हैं।[4]

कृषि उपकरण :– किसी भी क्षेत्र के जीवन यापन के मुख्य अंगों को जाने बगैर उस क्षेत्र का इतिहास अधूरा ही रहेगा। उत्तराखंड में कृषि और पशुपालन ही आजीविका का प्रमुख साधन रहे हैं। संग्रहालय में यहां के प्रमुख परंपरागत कृषि यंत्रों को संकलित कर उनसे आने वाली पीढ़ी को परिचित कराने का प्रयास किया गया है। यहां पर हल, दनेला, जुआ, पाटा आदि कृषि उपकरण संकलित किये गये हैं।

घरेलू उपयोग के उपकरण :– कृषि उपकरणों के साथ ही संग्रहालय में घरेलू उपयोग के परंपरागत उपकरणों को सहेजकर रखा गया है। नई टेक्नोलॉजी के आने से यह बर्तन और उपकरण अब विलुप्ति के कगार पर हैं। यहाँ पर घरेलू बर्तनों में लकड़ी की परात (पावो), बिसावो, डौंकली, ठिनका, मालू के पत्तों की बरसाती, दही व घी रखने के लकड़ी के बर्तन (ठेकियों) आदि का संग्रह किया गया है।[5]

वाद्य–यंत्र :– प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट कला–संस्कृति होती है। जो यहां के मनुष्यों के लिए विशेष महत्व रखती है। उत्तराखंड एक ऐसा क्षेत्र रहा है जो बहुत समय तक अपनी कला–संस्कृति के प्राचीन स्वरूप को बनाये रख सका। इसका मुख्य कारण यातायात के साधनों का अभाव भी था, जिस कारण यह क्षेत्र बाहरी दुनिया के संपर्क में बाद में आया। यहां का लोक गीत–संगीत, यहां की भौगोलिक विविधता के अनुरूप ही विविधता भरा है, साथ ही गीत–संगीत के साथ लोक वाद्य भी अनिवार्यतः जुड़ा है। संग्रहालय में यहां के लोक वाद्यों का प्रस्तुतीकरण भी सराहनीय है। यहां लोक वाद्यों में ढोल, दमाऊ तूरी, रणसिंगा, हुड़का आदि दर्शाये गये हैं।

मुखौटे :– उत्तराखंड में मुखौटा उत्सवों की भी समृद्ध परंपरा रही है। मुखौटा उत्सवों में सीमांत जनपद पिथौरागढ़ में होने वाला लोकोत्सव हिलजात्रा सभी के आकर्षण का केन्द्र रहता है। संग्रहालय में हिलजात्रा के सभी मुखौटे, देवीधूरा मन्दिर के पाषाण युद्ध में प्रयुक्त होने वाला फर्रा (ढाल) आदि प्रदर्शित किये गये हैं।[6]

क्षेत्रीय व राष्ट्रीय अखबार :– यह सर्वविदित तथ्य है कि आधुनिक समाज में चेतना फैलाने का कार्य पत्रकारिता ने किया है। उत्तराखंड में भी पत्रकारिता का इतिहास यहां पर चले स्वाधीनता आंदोलन के समानांतर और पूरक है। यहां की पत्रकारिता ने स्थानीय जागरण के जरिये उस स्थानीय जागृति को राष्ट्रीय आंदोलन से एकाकार करने का प्रयास किया।[7]

हिमालय संग्रहालय में औपनिवेशिक उत्तराखंड के प्रमुख पत्रों अल्मोड़ा अखबार, शक्ति, गढ़वाली, स्वाधीन प्रजा, कर्मभूमि, तरुण कुमाऊँ के साथ ही हरिजन सेवक, यंग इण्डिया, हिन्दी नवजीवन के कुछ अंक तथा पर्वतीय की समस्त फाइलों को संकलित किया गया है।

पाण्डुलिपियाँ :– उत्तराखण्ड में यत्र–तत्र पांडुलिपियां बिखरी पड़ी हैं। संग्रहालय कर्मियों ने विविध क्षेत्रों में संपर्क कर पांडुलिपियों को संकलित करने का प्रयास किया है। संग्रहालय की पांडुलिपि गैलरी में ऋषि तर्पण पद्धति, हरिवंश पुराण, योगेश्वर महात्म्य, रामगंगा महात्म्य, शिव पुराण आदि प्रदर्शित किये गये हैं।[8]

अस्त्र–शस्त्र :– चंदकालीन ढाल–तलवार, छोलिया नृत्य में प्रयुक्त होने वाली ढाल–तलवार आदि।

छायाचित्र संकलन :– उत्तराखण्ड की जैवविविधता, शैलचित्र, समाज, संस्कृति, लोककला, क्षेत्रीय पत्रकारिता, गाँधी का कुमाऊँ आगमन, स्वाधीनता संग्राम, ताम्रपत्र, मंदिर, स्थान तथा व्यक्तित्वों से सम्बन्धित लगभग 1000 छायाचित्र।

अन्य सामग्री :– घराट, ऊखल, मिट्टी का पाइप, ठेकियों में लोक चित्रकला (ऐपण), आमलक, मृदभाँड, जीवाश्म, डाँडी (डोलियाँ) आदि।[9]

निष्कर्ष एवं सुझावः

संग्रहालय में संकलित उक्त अमूल्य व दुर्लभ सामग्री के आलोक में यह कहना उचित होगा कि यहाँ आने वाले आगन्तुक उत्तराखण्ड के प्राचीन से वर्तमान तक के परिदृश्य या विकास यात्रा को महसूस कर सकते हैं। लेकिन यहाँ पर एक बात महत्वपूर्ण है कि संग्रहालय में कार्यरत सभी संग्रहालय कर्मी पूरी लगन और निष्ठा के साथ सामग्री संकलन, संरक्षण,

संवर्धन तथा प्रलेखीकरण में लगे हए हैं। परंतु धनाभाव के कारण संग्रहालय में संकलित सामग्री का उचित साज–सज्जा के साथ प्रदर्शन नहीं हो पाया है। अतः सरकार को चाहिए कि उत्तराखंड की अमूल्य धरोहरों को संकलित किये हुए इस संग्रहालय को उचित आर्थिक सहायता देकर उन धरोहरों को भावी पीढ़ी तक पहुंचाने हेतु उन्हें संरक्षण प्रदान कर इस हिमालय संग्रहालय को और भी संरक्षित और संवर्धित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. अग्रवाल, ऊषा, म्यूजियम्स इन इंडिया, संदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ 1
2. बलूनी, दिनेश चन्द्र, उत्तरांचलः संस्कृति, लोकजीवन, इतिहास एवं पुरातत्व, प्रकाश बुक डिपो बरेली, 2001, पृष्ठ 17
3. हिमालय संग्रहालय ब्रोशर, नैनीताल, 2008
4. शोधार्थी द्वारा हिमालय संग्रहालय अवलोकन, दिनांक 12–08–2021 तथा साक्षात्कार–डा0 भुवन चंद्र शर्मा, सहायक क्यूरेटर, हिमालय संग्रहालय, दिनांक 12–08–2021
5. शोधार्थी द्वारा हिमालय संग्रहालय अवलोकन, दिनांक 12–08–2021 तथा साक्षात्कार–डा0 भुवन चंद्र आर्या, सहायक क्यूरेटर, हिमालय संग्रहालय, दिनांक 12–08–2021
6. शोधार्थी द्वारा हिमालय संग्रहालय अवलोकन, दिनांक 13–08–2021 तथा साक्षात्कार–डा0 पूरन सिंह अधिकारी, सहायक क्यूरेटर, हिमालय संग्रहालय, दिनांक 13–08–2021
7. शर्मा, भुवन चंद्रः गढ़वाली पत्र –विविध आयाम, उत्तराखंड के प्रमुख पत्र गढ़वाली का समग्र अध्ययन, कुमाऊँ विश्वविद्यालय का अप्रकाशित शोध प्रबंध, 2002, पृ –9
8. शोधार्थी द्वारा हिमालय संग्रहालय अवलोकन, दिनांक 14–08–2021 तथा साक्षात्कार–डा0 एच0एस0 जलाल, वर्गीकरण सहायक, हिमालय संग्रहालय, दिनांक–14–08–2021
9. हिमालय संग्रहालय, ब्रोशर, नैनीताल, 2008